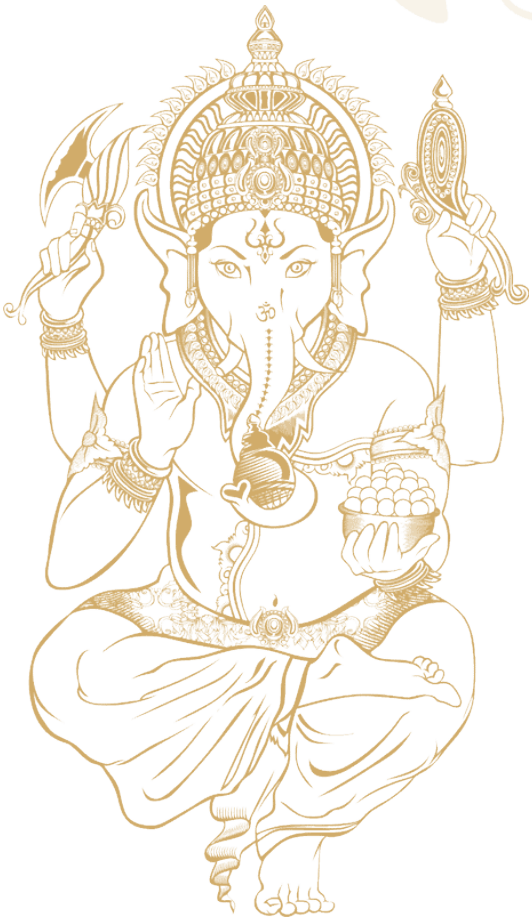

Mr.Gursharan Singh Dhillon

10 Apr 1988

01:30 AM

Ludhiana

Model: Web-MyKundli

Order No: 119164501

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती हैं। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग	पुल्लिंग
जन्म तिथि	**9-10/04/1988**
दिन	शनि-रविवार
जन्म समय	**01:30:00 घंटे**
इष्ट	48:29:46 घटी
स्थान	**Ludhiana**
राज्य	Punjab
देश	India

अक्षांश	30:56:00 उत्तर
रेखांश	75:52:00 पूर्व
मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार	-00:26:32 घंटे
ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
स्थानिक समय	01:03:28 घंटे
वेलान्तर	-00:01:33 घंटे
साम्पातिक काल	14:16:34 घंटे
सूर्योदय	06:06:05 घंटे
सूर्यास्त	18:50:38 घंटे
दिनमान	12:44:33 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन)	उत्तरायण
सूर्य स्थिति(गोल)	उत्तर
ऋतु	वसन्त
सूर्य के अंश	26:28:56 मीन
लग्न के अंश	24:46:50 धनु

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति	धनु - गुरु
राशि-स्वामी	**धनु - गुरु**
नक्षत्र-चरण	**उत्तराषाढ़ा - 1**
नक्षत्र स्वामी	सूर्य
योग	शिव
करण	कौलव
गण	मनुष्य
योनि	नकुल
नाड़ी	अन्त्य
वर्ण	क्षत्रिय
वश्य	मानव
वर्ग	मूषक
युँजा	अन्त्य
हंसक	अग्नि
जन्म नामाक्षर	भे-भैरव
पाया(राशि-नक्षत्र)	स्वर्ण - ताम्र
सूर्य राशि(पाश्चात्य)	मेष

पंचांग

दादा का नाम _____:
पिता का नाम _____:
माता का नाम _____:
जाति _____:
गोत्र _____:

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1910	चैत्र	21
पंजाबी	संवत : 2044	चैत्र	28
बंगाली	सन् : 1394	चैत्र	27
तमिल	संवत : 2044	पंगुनी	28
केरल	कोल्लम : 1163	मीनम	28
नेपाली	संवत : 2044	चैत्र	28
चैत्रादि	संवत : 2045	वैशाख	कृष्ण 8
कार्तिकादि	संवत : 2045	चैत्र	कृष्ण 8

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि ____: 7
तिथि समाप्ति काल _____: 13:43:14
जन्म तिथि _____: 8
सूर्योदय कालीन नक्षत्र ____: पूर्वाषाढ़ा
नक्षत्र समाप्ति काल _____: 25:12:41 घंटे
जन्म योग _____: उत्तराषाढ़ा
सूर्योदय कालीन योग ____: परिघ
योग समाप्ति काल _____: 09:24:16 घंटे
जन्म योग _____: शिव
सूर्योदय कालीन करण ____: बव
करण समाप्ति काल _____: 13:43:14 घंटे
जन्म करण _____: कौलव
भयात _____: 00:43:19
भभोग _____: 56:48:07
भोग्य दशा काल _____: सूर्य 5 वर्ष 11 मा 2 दि

घात चक्र

मास _____: श्रावण
तिथि _____: 3-8-13
दिन _____: शुक्रवार
नक्षत्र _____: भरणी
योग _____: वज्र
करण _____: तैतिल
प्रहर _____: 1
वर्ग _____: मार्जार
लग्न _____: धनु
सूर्य _____: तुला
चन्द्र _____: मीन
मंगल _____: वृश्चिक
बुध _____: सिंह
गुरु _____: धनु
शुक्र _____: कुम्भ
शनि _____: कन्या
राहु _____: कुम्भ

जन्म कुण्डली

लग्न कुंडली

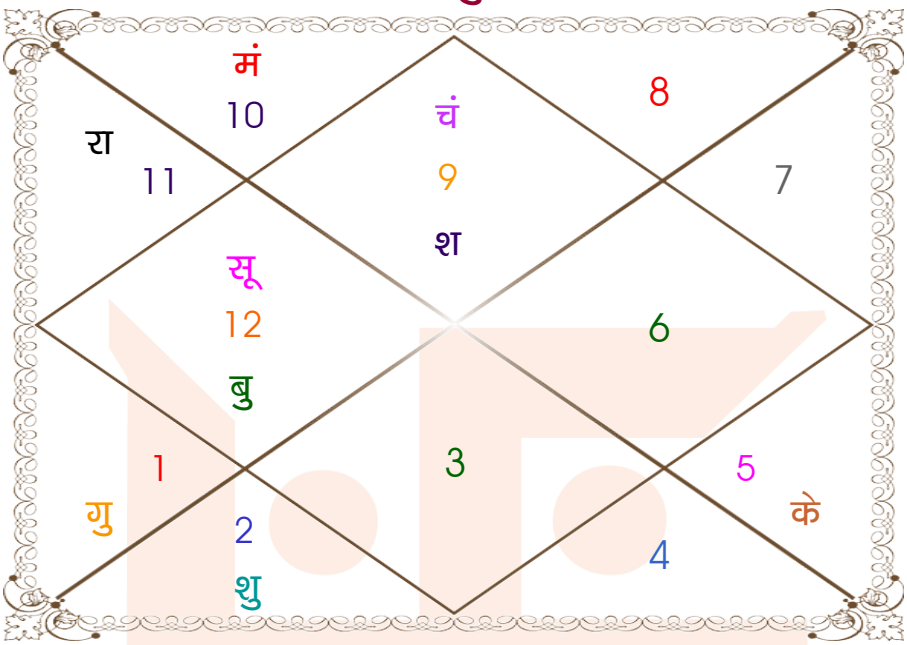

चन्द्र कुंडली

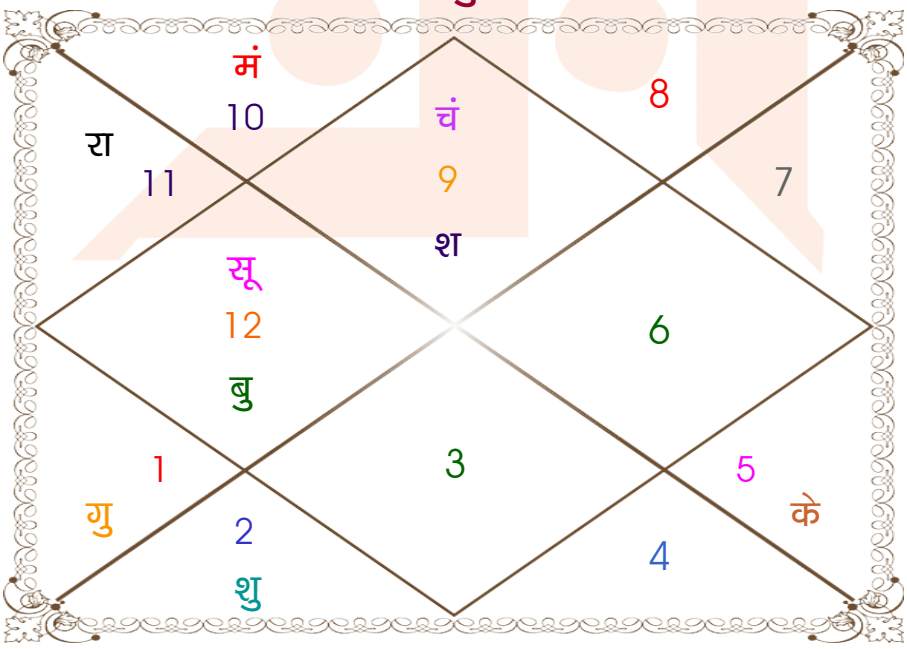

Harvinder Singh Astrologer Gold Medalist
#14850, Street No 7 Parbhat Nagar Dholewal Ludhiana 141003 Punjab India
Mobile No: 98140-28644
Email : astrovision@msn.com Website: www.astro-vision.co.in

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

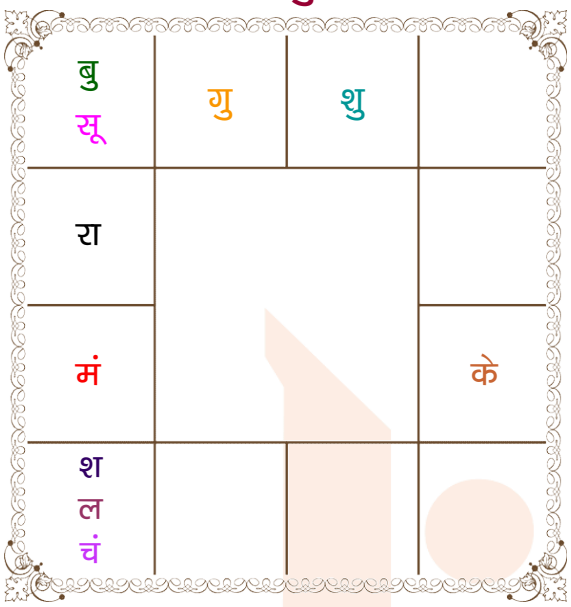

लग्न कुंडली

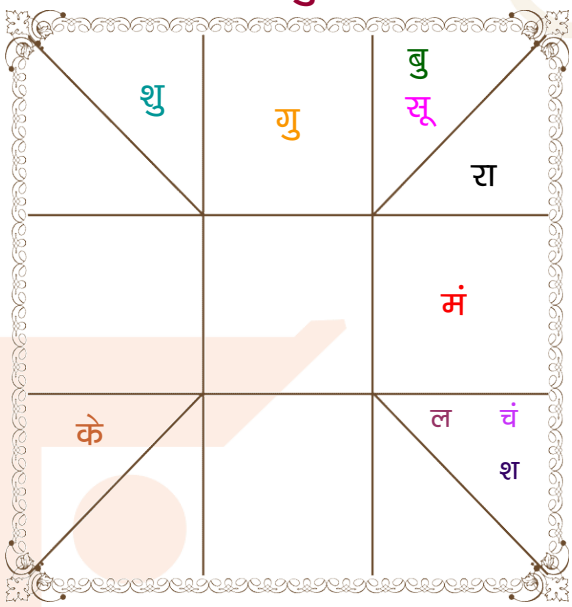

विंशोत्तरी
सूर्य 5वर्ष 11मा 2दि

सूर्य

10/04/1988

14/03/2108

सूर्य	13/03/1994
चन्द्र	13/03/2004
मंगल	14/03/2011
राहु	13/03/2029
गुरु	13/03/2045
शनि	13/03/2064
बुध	13/03/2081
केतु	13/03/2088
शुक्र	14/03/2108

योगिनी
संकटा 7वर्ष 10मा 24दि

संकटा

04/03/2024

04/03/2032

संकटा	13/12/2025
मंगला	04/03/2026
पिंगला	14/08/2026
धान्या	14/04/2027
भ्रामरी	04/03/2028
भद्रिका	14/04/2029
उल्का	14/08/2030
सिद्धा	04/03/2032

Harvinder Singh Astrologer Gold Medalist
#14850, Street No 7 Parbhat Nagar Dholewal Ludhiana 141003 Punjab India
Mobile No: 98140-28644
Email : astrovision@msn.com Website: www.astro-vision.co.in

ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			धनु	24:46:50	371:59:46	पूर्वाषाढ़ा	4	20	गुरु	शुक्र	बुध	---
सूर्य			मीन	26:28:56	00:58:55	रेवती	3	27	गुरु	बुध	गुरु	मित्र राशि
चंद्र			धनु	26:50:06	13:58:54	उत्तराषाढ़ा	1	21	गुरु	सूर्य	सूर्य	सम राशि
मंगल			मक	08:16:31	00:40:20	उत्तराषाढ़ा	4	21	शनि	सूर्य	शुक्र	उच्च राशि
बुध		अ	मीन	15:17:55	01:53:25	उ०भाद्रपद	4	26	गुरु	शनि	गुरु	नीच राशि
गुरु			मेष	13:29:34	00:14:03	भरणी	1	2	मंगल	शुक्र	शुक्र	मित्र राशि
शुक्र			वृष	12:08:42	00:55:40	रोहिणी	1	4	शुक्र	चंद्र	राहु	स्वराशि
शनि			धनु	08:51:31	00:00:07	मूल	3	19	गुरु	केतु	गुरु	सम राशि
राहु			कुंभ	29:05:31	00:00:22	पू०भाद्रपद	3	25	शनि	गुरु	सूर्य	मित्र राशि
केतु			सिंह	29:05:31	00:00:22	उ०फाल्गुनी	1	12	सूर्य	सूर्य	मंगल	शत्रु राशि
हर्ष	व		धनु	07:20:35	00:00:15	मूल	3	19	गुरु	केतु	राहु	---
नेप			धनु	16:29:59	00:00:03	पूर्वाषाढ़ा	1	20	गुरु	शुक्र	चंद्र	---
प्लूटो	व		तुला	18:05:22	00:01:32	स्वाति	4	15	शुक्र	राहु	सूर्य	---
दशम भाव			तुला	12:46:36	--	स्वाति	--	15	शुक्र	राहु	बुध	--

व - वक्री स - स्थिर

अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त

राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:41:37

लग्न-चलित

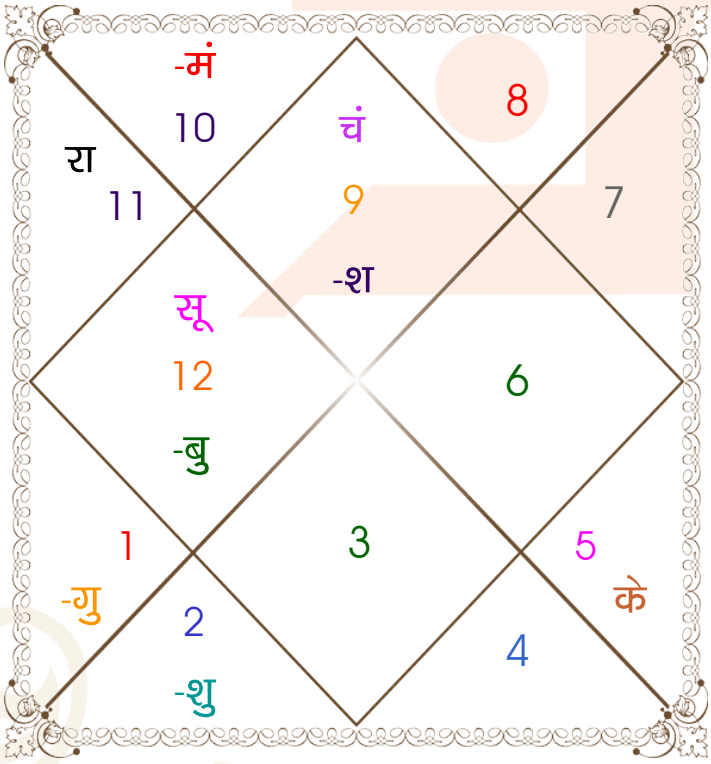

चन्द्र कुंडली

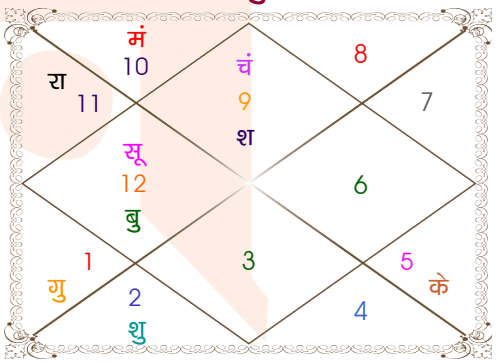

नवमांश कुंडली

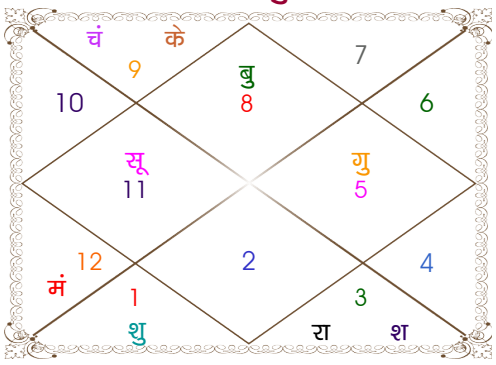

Harvinder Singh Astrologer Gold Medalist
#14850, Street No 7 Parbhat Nagar Dholewal Ludhiana 141003 Punjab India
Mobile No: 98140-28644
Email : astrovision@msn.com Website: www.astro-vision.co.in

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि		भाव मध्य	
1	धनु	12:46:48	धनु	24:46:50
2	मकर	12:46:48	कुम्भ	00:46:45
3	कुम्भ	18:46:43	मीन	06:46:41
4	मीन	24:46:38	मेष	12:46:36
5	मेष	24:46:38	वृष	06:46:41
6	वृष	18:46:43	मिथुन	00:46:45
7	मिथुन	12:46:48	मिथुन	24:46:50
8	कर्क	12:46:48	सिंह	00:46:45
9	सिंह	18:46:43	कन्या	06:46:41
10	कन्या	24:46:38	तुला	12:46:36
11	तुला	24:46:38	वृश्चिक	06:46:41
12	वृश्चिक	18:46:43	धनु	00:46:45

निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	धनु	24:46:50
2	कुम्भ	03:06:11
3	मीन	11:14:57
4	मेष	12:46:36
5	वृष	08:13:14
6	मिथुन	00:56:24
7	मिथुन	24:46:50
8	सिंह	03:06:11
9	कन्या	11:14:57
10	तुला	12:46:36
11	वृश्चिक	08:13:14
12	धनु	00:56:24

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी
कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी
उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा

चलित कुंडली

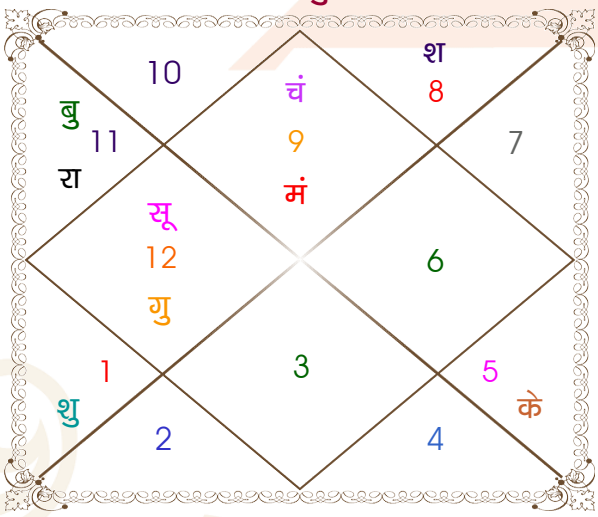

भाव कुंडली

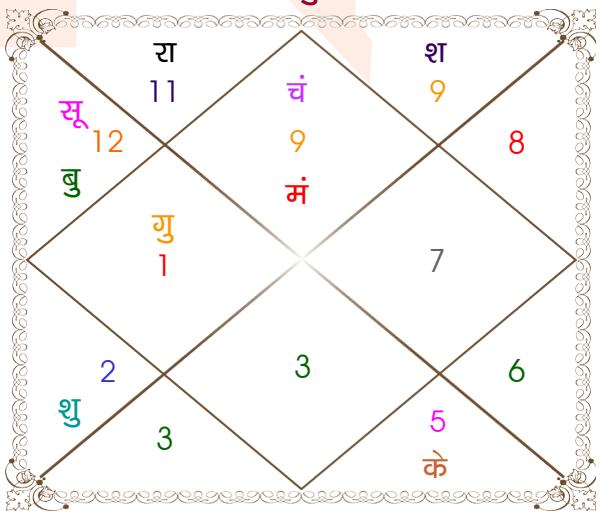

Harvinder Singh Astrologer Gold Medalist
#14850, Street No 7 Parbhat Nagar Dholewal Ludhiana 141003 Punjab India
Mobile No: 98140-28644
Email : astrovision@msn.com Website: www.astro-vision.co.in

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : सूर्य 5 वर्ष 11 मास 2 दिन

सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 10 वर्ष		मंगल 7 वर्ष		राहु 18 वर्ष		गुरु 16 वर्ष	
10/04/1988		13/03/1994		13/03/2004		14/03/2011		13/03/2029	
13/03/1994		13/03/2004		14/03/2011		13/03/2029		13/03/2045	
सूर्य	30/06/1988	चंद्र	12/01/1995	मंगल	09/08/2004	राहु	24/11/2013	गुरु	01/05/2031
चंद्र	30/12/1988	मंगल	13/08/1995	राहु	28/08/2005	गुरु	18/04/2016	शनि	12/11/2033
मंगल	07/05/1989	राहु	11/02/1997	गुरु	03/08/2006	शनि	23/02/2019	बुध	18/02/2036
राहु	01/04/1990	गुरु	13/06/1998	शनि	12/09/2007	बुध	12/09/2021	केतु	23/01/2037
गुरु	18/01/1991	शनि	12/01/2000	बुध	08/09/2008	केतु	30/09/2022	शुक्र	24/09/2039
शनि	31/12/1991	बुध	12/06/2001	केतु	05/02/2009	शुक्र	30/09/2025	सूर्य	13/07/2040
बुध	05/11/1992	केतु	12/01/2002	शुक्र	07/04/2010	सूर्य	25/08/2026	चंद्र	12/11/2041
केतु	13/03/1993	शुक्र	12/09/2003	सूर्य	13/08/2010	चंद्र	24/02/2028	मंगल	19/10/2042
शुक्र	13/03/1994	सूर्य	13/03/2004	चंद्र	14/03/2011	मंगल	13/03/2029	राहु	13/03/2045

शनि 19 वर्ष		बुध 17 वर्ष		केतु 7 वर्ष		शुक्र 20 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष	
13/03/2045		13/03/2064		13/03/2081		13/03/2088		14/03/2108	
13/03/2064		13/03/2081		13/03/2088		14/03/2108		00/00/0000	
शनि	16/03/2048	बुध	10/08/2066	केतु	09/08/2081	शुक्र	13/07/2091	सूर्य	11/04/2108
बुध	24/11/2050	केतु	07/08/2067	शुक्र	09/10/2082	सूर्य	13/07/2092		00/00/0000
केतु	03/01/2052	शुक्र	07/06/2070	सूर्य	14/02/2083	चंद्र	13/03/2094		00/00/0000
शुक्र	05/03/2055	सूर्य	13/04/2071	चंद्र	15/09/2083	मंगल	14/05/2095		00/00/0000
सूर्य	15/02/2056	चंद्र	12/09/2072	मंगल	11/02/2084	राहु	13/05/2098		00/00/0000
चंद्र	15/09/2057	मंगल	09/09/2073	राहु	01/03/2085	गुरु	12/01/2101		00/00/0000
मंगल	25/10/2058	राहु	28/03/2076	गुरु	05/02/2086	शनि	14/03/2104		00/00/0000
राहु	31/08/2061	गुरु	04/07/2078	शनि	17/03/2087	बुध	13/01/2107		00/00/0000
गुरु	13/03/2064	शनि	13/03/2081	बुध	13/03/2088	केतु	14/03/2108		00/00/0000

- उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल सूर्य 5 वर्ष 11 मा 3 दि होता है।
- उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

Harvinder Singh Astrologer Gold Medalist
#14850, Street No 7 Parbhat Nagar Dholewal Ludhiana 141003 Punjab India
Mobile No: 98140-28644
Email : astrovision@msn.com Website: www.astro-vision.co.in

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

राहु - शुक्र		राहु - सूर्य		राहु - चंद्र		राहु - मंगल		गुरु - गुरु	
30/09/2022		30/09/2025		25/08/2026		24/02/2028		13/03/2029	
30/09/2025		25/08/2026		24/02/2028		13/03/2029		01/05/2031	
शुक्र	01/04/2023	सूर्य	16/10/2025	चंद्र	09/10/2026	मंगल	17/03/2028	गुरु	25/06/2029
सूर्य	26/05/2023	चंद्र	13/11/2025	मंगल	10/11/2026	राहु	14/05/2028	शनि	26/10/2029
चंद्र	25/08/2023	मंगल	02/12/2025	राहु	01/02/2027	गुरु	04/07/2028	बुध	14/02/2030
मंगल	28/10/2023	राहु	20/01/2026	गुरु	15/04/2027	शनि	02/09/2028	केतु	31/03/2030
राहु	09/04/2024	गुरु	05/03/2026	शनि	10/07/2027	बुध	27/10/2028	शुक्र	08/08/2030
गुरु	02/09/2024	शनि	26/04/2026	बुध	26/09/2027	केतु	18/11/2028	सूर्य	16/09/2030
शनि	23/02/2025	बुध	12/06/2026	केतु	28/10/2027	शुक्र	21/01/2029	चंद्र	20/11/2030
बुध	28/07/2025	केतु	01/07/2026	शुक्र	27/01/2028	सूर्य	09/02/2029	मंगल	04/01/2031
केतु	30/09/2025	शुक्र	25/08/2026	सूर्य	24/02/2028	चंद्र	13/03/2029	राहु	01/05/2031

गुरु - शनि		गुरु - बुध		गुरु - केतु		गुरु - शुक्र		गुरु - सूर्य	
01/05/2031		12/11/2033		18/02/2036		23/01/2037		24/09/2039	
12/11/2033		18/02/2036		23/01/2037		24/09/2039		13/07/2040	
शनि	25/09/2031	बुध	09/03/2034	केतु	08/03/2036	शुक्र	05/07/2037	सूर्य	09/10/2039
बुध	03/02/2032	केतु	26/04/2034	शुक्र	04/05/2036	सूर्य	23/08/2037	चंद्र	02/11/2039
केतु	28/03/2032	शुक्र	11/09/2034	सूर्य	21/05/2036	चंद्र	12/11/2037	मंगल	19/11/2039
शुक्र	29/08/2032	सूर्य	23/10/2034	चंद्र	19/06/2036	मंगल	07/01/2038	राहु	02/01/2040
सूर्य	14/10/2032	चंद्र	31/12/2034	मंगल	09/07/2036	राहु	03/06/2038	गुरु	10/02/2040
चंद्र	31/12/2032	मंगल	17/02/2035	राहु	29/08/2036	गुरु	10/10/2038	शनि	28/03/2040
मंगल	22/02/2033	राहु	21/06/2035	गुरु	13/10/2036	शनि	14/03/2039	बुध	08/05/2040
राहु	11/07/2033	गुरु	09/10/2035	शनि	06/12/2036	बुध	30/07/2039	केतु	25/05/2040
गुरु	12/11/2033	शनि	18/02/2036	बुध	23/01/2037	केतु	24/09/2039	शुक्र	13/07/2040

गुरु - चंद्र		गुरु - मंगल		गुरु - राहु		शनि - शनि		शनि - बुध	
13/07/2040		12/11/2041		19/10/2042		13/03/2045		16/03/2048	
12/11/2041		19/10/2042		13/03/2045		16/03/2048		24/11/2050	
चंद्र	22/08/2040	मंगल	02/12/2041	राहु	27/02/2043	शनि	03/09/2045	बुध	02/08/2048
मंगल	20/09/2040	राहु	22/01/2042	गुरु	24/06/2043	बुध	06/02/2046	केतु	29/09/2048
राहु	02/12/2040	गुरु	08/03/2042	शनि	10/11/2043	केतु	11/04/2046	शुक्र	11/03/2049
गुरु	05/02/2041	शनि	01/05/2042	बुध	13/03/2044	शुक्र	11/10/2046	सूर्य	30/04/2049
शनि	23/04/2041	बुध	18/06/2042	केतु	03/05/2044	सूर्य	05/12/2046	चंद्र	21/07/2049
बुध	01/07/2041	केतु	08/07/2042	शुक्र	26/09/2044	चंद्र	07/03/2047	मंगल	16/09/2049
केतु	29/07/2041	शुक्र	03/09/2042	सूर्य	09/11/2044	मंगल	10/05/2047	राहु	10/02/2050
शुक्र	18/10/2041	सूर्य	20/09/2042	चंद्र	21/01/2045	राहु	21/10/2047	गुरु	21/06/2050
सूर्य	12/11/2041	चंद्र	19/10/2042	मंगल	13/03/2045	गुरु	16/03/2048	शनि	24/11/2050

Harvinder Singh Astrologer Gold Medalist
#14850, Street No 7 Parbhat Nagar Dholewal Ludhiana 141003 Punjab India
Mobile No: 98140-28644
Email : astrovision@msn.com Website: www.astro-vision.co.in

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांको से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	1
भाग्यांक	4
मित्र अंक	1, 4, 8, 9
शत्रु अंक	3, 5, 6
शुभ वर्ष	19,28,37,46,55
शुभ दिन	रवि, गुरु, मंगल
शुभ ग्रह	सूर्य, गुरु, मंगल
मित्र राशि	मीन, सिंह
मित्र लग्न	मीन, सिंह, तुला
अनुकूल देवता	हनुमान
शुभ रत्न	पुखराज
शुभ उपरत्न	सुनहला, पीला हकीक
भाग्य रत्न	माणिक्य
शुभ धातु	कांसा
शुभ रंग	पीत
शुभ दिशा	पूर्वोत्तर
शुभ समय	संध्या
दान पदार्थ	हल्दी, पुस्तक, पीत पुष्प
दान अन्न	दाल चना
दान द्रव्य	घी

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
पुखराज	गुरु	100%	सन्तति सुख, स्वास्थ्य, सुख
माणिक्य	सूर्य	89%	सुख, भाग्योदय
मूंगा	मंगल	77%	धन, सन्तति सुख, कम खर्च
लहसुनिया	केतु	73%	भाग्योदय, सुख
नीलम	शनि	69%	स्वास्थ्य, धन, पराक्रम
गोमेद	राहु	67%	पराक्रम, स्वास्थ्य
पन्ना	बुध	55%	सुख, दम्पति, व्यावसायिक उन्नति
हीरा	शुक्र	21%	शत्रु व रोग, हानि
मोती	चंद्र	19%	रोग, दुर्घटना

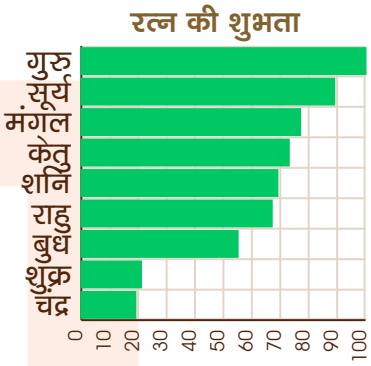

दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
सूर्य	13/03/1994	100%	31%	83%	55%	100%	0%	56%	55%	61%
चंद्र	13/03/2004	95%	44%	77%	61%	100%	21%	69%	55%	61%
मंगल	14/03/2011	95%	31%	89%	34%	100%	21%	69%	55%	80%
राहु	13/03/2029	77%	0%	64%	55%	100%	34%	75%	80%	61%
गुरु	13/03/2045	95%	31%	83%	34%	100%	0%	69%	67%	73%
शनि	13/03/2064	77%	0%	64%	61%	100%	34%	81%	73%	61%
बुध	13/03/2081	95%	0%	77%	67%	100%	34%	69%	67%	73%
केतु	13/03/2088	77%	0%	83%	55%	100%	34%	56%	55%	86%
शुक्र	14/03/2108	77%	0%	77%	61%	100%	46%	75%	73%	80%

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है । लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है । साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है ।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है । प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है । प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है । द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है ।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है ।

प्रथम चक्रः

साढेसाती द्वितीय ढैया	10/04/1988-21/03/1990	20/06/1990-15/12/1990	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	21/03/1990-20/06/1990	15/12/1990-05/03/1993	15/10/1993-10/11/1993
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	02/06/1995-10/08/1995	16/02/1996-17/04/1998	----------
अष्टम स्थानस्थ ढैया	06/09/2004-13/01/2005	26/05/2005-01/11/2006	10/01/2007-16/07/2007
साढेसाती प्रथम ढैया	02/11/2014-26/01/2017	21/06/2017-26/10/2017	----------

द्वितीय चक्रः

साढेसाती द्वितीय ढैया	26/01/2017-21/06/2017	26/10/2017-24/01/2020	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	24/01/2020-29/04/2022	12/07/2022-17/01/2023	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	29/03/2025-03/06/2027	20/10/2027-23/02/2028	----------
अष्टम स्थानस्थ ढैया	13/07/2034-27/08/2036	----------	----------
साढेसाती प्रथम ढैया	11/12/2043-23/06/2044	30/08/2044-08/12/2046	----------

तृतीय चक्रः

साढेसाती द्वितीय ढैया	08/12/2046-06/03/2049	10/07/2049-04/12/2049	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	06/03/2049-10/07/2049	04/12/2049-25/02/2052	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	14/05/2054-02/09/2054	05/02/2055-07/04/2057	----------
अष्टम स्थानस्थ ढैया	24/08/2063-06/02/2064	09/05/2064-13/10/2065	03/02/2066-03/07/2066
साढेसाती प्रथम ढैया	05/02/2073-31/03/2073	23/10/2073-16/01/2076	11/07/2076-11/10/2076

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
साढेसाती द्वितीय ढैया	सम	स्वास्थ्य
साढेसाती तृतीय ढैया	शुभ	धन
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	सम	सुख
अष्टम स्थानस्थ ढैया	अशुभ	दुर्घटना
साढेसाती प्रथम ढैया	अशुभ	व्यय

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

ऊँ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात।।

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ऊँ हों जूं सः ऊँ भूर्भुव स्वः ऊँ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें । लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें ।

ऊँ शं शनैश्चराय नमः।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है ।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे।
स्त्री भर्तुर्विनाशंच भर्ता च स्त्री विनाशनम्।।

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

****

आपकी जन्म कुंडली में मंगल की स्थिति द्वितीय भाव में है। कुंडली में यह भाव मुख्य रूप से वाणी तथा कुटुम्ब का प्रतिनिधित्व करता है। अतः मंगल के प्रभाव से आपकी पारिवारिक सुख शान्ति तथा समृद्धि मध्यम रहेगी तथा यदा कदा पारिवारिक जनों में मतभेद का वातावरण बन सकता है। इसी कारण दक्षिण भारत में इसे कुज दोष भी माना जाता है। आपकी वाणी में भी ओजस्विता का भाव रहेगा तथा लोग आपसे प्रभावित रहेंगे। धनार्जन के लिए यह स्थिति उत्तम रहेगी तथा स्वपरिश्रम एवं पराक्रम से आप इच्छित धन एवं सुख संसाधनों को अर्जित करके पारिवारिक जनों को सन्तुष्ट करने में समर्थ रहेंगे।

कुंडली में द्वितीय भावस्थ मंगल की पंचम भाव पर दृष्टि से पुत्र संतति से आप युक्त रहेंगे तथा जीवन में उनसे आपको पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा लेकिन संतति प्राप्ति में किंचित विलम्ब हो सकता है साथ ही उच्च शिक्षा अर्जित करने में भी आप सफल रहेंगे। अष्टम भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से शारीरिक स्वास्थ्य सामान्यतया अच्छा रहेगा। यदा कदा पित या गर्मी से कोई परेशानी हो सकती है लेकिन इसका कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा। शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य यथा समय सिद्ध होंगे। नवम भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से आप अपने कार्यों एवं पराक्रम से भाग्य का निर्माण करेंगे। जीवन में उन्नति के पथ पर अग्रसर रहेंगे साथ ही आप भाग्य वादी न होकर कर्म करने में विश्वास रखेंगे।

इस प्रकार आप द्वितीय भावस्थ मंगल के प्रभाव से पारिवारिक सुख शान्ति तथा समृद्धि को बनाएं रखेंगे तथा पारिवारिक जनों का उचित रूप से पालन करेंगे साथ ही वे भी आपको यथोचित सुख एवं सहयोग प्रदान करेंगे। इसके अतिरिक्त अपने दाम्पत्य जीवन को सुखी बनाने के लिए आपको किसी गैर मांगलिक कन्या से विवाह करना चाहिए। जिससे आप प्रसन्नता पूर्वक जीवन में सुखों का उपभोग करेंगे तथा एक दूसरे को सहयोग प्रदान करके

मानसिक सन्तुष्टि प्राप्त करेंगे।

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादाश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं –

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च।
नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।
13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- त्रिक भाव का स्वामी लग्न में स्थित है और उस पर शनि का प्रभाव है।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह त्र्यंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

ग्रह फल

सूर्य

चतुर्थभाव में सूर्य हो तो जातक परमसुन्दर, कठोर, पितृधननाशक, चिन्तास्त, भाईयों से वैर करने वाला, गुप्तविद्या प्रिय एवं वाहन सुखहीन होता है।

मीन राशि में रवि हो तो जातक बुद्धिमान्, यशस्वी, व्यापारी, विवेकी ज्ञानी, योगी, प्रेमी, गुप्त विद्याओं में रुचि रखने वाला और स्वसुर से लाभन्वित होता है।

आपके जन्म काल में सूर्य चतुर्थ भाव में स्थित है। अतः पिता के आप प्रिय होंगे उनका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घ होगी। धनैश्वर्य से वे सर्वदा युक्त रहेंगे एवं जीवन के समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपका यत्नपूर्वक सहयोग करते रहेंगे। पिता से आपको धन, वाहन तथा अन्य प्रकार से सम्पत्ति अर्जित करते रहेंगे। इसके साथ ही नौकरी तथा व्यापार में भी आप उनसे सहयोग प्राप्त करते रहेंगे तथा उन्हीं के सहयोग से उन्नति भी करेंगे।

आप के मन में उनके प्रति सम्मान एवं आदर का भाव विद्यमान रहेगा एवं उनकी आज्ञा पालन में भी रुचि रहेगी। आपके परस्पर मतभेदों के कारण संबंधों में तनाव उत्पन्न होगा परन्तु वह क्षणिक रहेगा। इसके अतिरिक्त जीवन में आप हमेशा उनके सुख दुःख का भी ध्यान रखेंगे तथा अवसरानुकूल वांछित सहायता भी प्रदान करेंगे।

चन्द्र

लग्न (प्रथम) में चन्द्रमा हो तो जातक बलवान्, सुखी, स्थूलशरीर, गान वाद्य प्रिय, ऐश्वर्यशाली, व्यवसायी, उदार, धनी एवं विद्वान होता है।

धनु राशि में चन्द्रमा हो तो जातक वक्त, सुन्दर, शिल्पज्ञ, शत्रुविनाशक उच्च बौद्धिक स्तर वाला, सुखी विवाहित जीवन, विरासत में धन सम्पत्ति पाने वाला, साहित्य के प्रति रुचि का दिखावा करने वाला एवं लेखक होता है।

आपके जन्म काल में चन्द्रमा की स्थिति लग्न में विद्यमान है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य आपके ग्रहों के शुभप्रभाव से अच्छा रहेगा एवं वे लम्बी आयु प्राप्त करेंगी। धन सम्पत्ति की भी उनको प्राप्ति होगी तथा इससे वे प्रायः युक्त ही रहेंगी। आपके प्रति उनका पूर्ण स्नेह भाव रहेगा एवं जीवन में सभी शुभ तथा महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको यथोचित सहयोग तथा सहायता प्रदान करती रहेंगी। आपके परस्पर अच्छे संबंध रहेंगे एवं आपसी मतभेदों की अल्पता रहेगी।

आप भी उनके प्रति हार्दिक सम्मान तथा आदर की भावना रखेंगे तथा उनकी आज्ञा पालन के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। इससे आप लोगों के आपसी विश्वास में वृद्धि होगी जो भविष्य में उन्नति दायक रहेगी। इस प्रकार आप भी जीवन में उनको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे।

मंगल

द्वितीय भाव में मंगल हो तो जातक कटुभाषी, नेत्रकर्ण रोगी, कटुतिक्त रसप्रिय, धर्मप्रेमी, चोर से भक्ति, कुटुम्ब क्लेश वाला, पशुपालक, निर्बुद्धि एवं निर्धन होता है।

मकर राशि में मंगल हो तो जातक ख्यातिप्राप्त, पराक्रमी, नेता ऐश्वर्यशाली, सुखी, सेनापति, उच्चपुलिस अधिकारी, प्रशासक, प्रचुर सन्तान, उदार, परिश्रमी एवं महत्वाकांक्षी होता है।

आप के जन्म काल में मंगल द्वितीय भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा वे शारीरिक रूप से व्याकुलता की अनुभूति भी करते रहेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह भाव विद्यमान रहेगा। धनार्जन एवं विद्यार्जन संबंधी कार्यों में वे आपको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे। साथ ही जीवन में अन्य महत्वपूर्ण एवं शुभ कार्यों में भी आपको उनका पूर्ण सहयोग एवं सद्भाव प्राप्त होगा।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह की भावना रहेगी। आपके आपसी संबंध मधुर होंगे परन्तु यदा कदा उनमें आपसी मतभेदों के कारण अनिश्चित काल के लिए कटुता या तनाव का वातावरण होगा। जीवन में आप हमेशा भाई बहिनों का सुख दुःख में ध्यान रखेंगे तथा अपनी ओर से हमेशा उन्हें पूर्ण आर्थिक एवं अन्य रूप में सहयोग प्रदान करते रहेंगे।

बुध

चतुर्थभाव में बुध हो तो जातक पण्डित भाग्यवान् नीतिवान्, नीतिज्ञ, लेखक, विद्वान्, बन्धुप्रेमी, उदार, गतिप्रिय, आलसी , स्थूलदेही, वाहनसुखी एवं दानी होता है।

मीन राशि में बुध हो तो जातक स्वाभिमानी, सदाचारी, सहनशील, भाग्यवान्, प्रवास में सुखी, मिष्टभाषी, कार्यदक्ष, धनसंही, नकल करने का स्वभाव, चिन्तित एवं छोटे दिल का होता है।

गुरु

पंचमभाव में गुरु हो तो जातक नीतिविशारद, सन्ततिवान्, सट्टे से धन प्राप्त करने वाला, कुलश्रेष्ठ, लोकप्रिय, कुटुम्ब में सबसे ऊँचा स्थान, ज्योतिषी एवं आस्तिक होता है।

मेष राशि में गुरु हो तो जातक ऐश्वर्यशाली, तेजस्वी, वकील, वादी, प्रसिद्ध, कीर्तिमान, विजयी, उस्वभाव, धनी, विद्वान, प्रचुर सन्तान, उदार, नम्रभाषी परन्तु अपने आपको दूसरों से उच्च समझने वाला, सुखी विवाहित जीवन एवं उच्चपद पर आसीन होता है।

शुक्र

षष्ठभाव में शुक्र हो तो जातक मितव्ययी, शत्रुनाशक, स्त्रीप्रिय, स्त्रीसुखहीन,

बहुमित्रवान्, वैभवहीन, दुराचारी, मूत्ररोगी, दुखी एवं गुप्तरोगी होता है।

वृष राशि में शुक्र हो तो जातक सुन्दर, ऐश्वर्यवान्, दानी, सदाचारी, सात्त्विक, परोपकारी, अनेक शास्त्रज्ञ, दृढ़, स्वतन्त्रकामुक, शौकीन तबीयत, संगीत-नृत्य तथा अन्य कलाओं में रुचि एवं आलसी होता है।

शनि

लग्न (प्रथम) में शनि मकर, कुम्भ तथा तुला का हो तो धनाढ्य, सुखी, धनु और मीन राशियों में हो तो अत्यन्त धनवान् और सम्मानित एवं अन्य राशियों का हो तो अशुभ होता है।

धनु राशि में शनि हो तो जातक व्यवहारज्ञ, पुत्र की कीर्ति से प्रसिद्ध सदाचारी, वृद्धावस्था में सुखी, सक्रिय, चतुर शान्तिप्रिय, दुःखी विवाहित जीवन एवं धनी होता है।

राहु

तृतीय भाव में राहु हो तो जातक योगाभ्यासी, विद्वान्, व्यवसायी, पराक्रमशून्य, दृढ़विवेकी, अरिष्टनाशक, प्रवासी, दीर्घायु एवं बलवान् होता है।

कुम्भ राशि में राहु हो तो जातक विद्वान्, लेखक मितभाषी एवं मितव्ययी होता है।

केतु

नवम भाव में केतु हो तो जातक सुखाभिलाषी, व्यर्थपरिश्रमी अपयशी, दुःखी एवं 48 वर्ष के बाद भाग्योदय होता है।

सिंह राशि में केतु हो तो जातक बहुभाषी, डरपोक, असहिष्णु, सर्पदशन का भय एवं असन्तोषी होता है।

दशा विश्लेषण

महादशा :- राहु
(14/03/2011 - 13/03/2029)

राहु की महादशा 14/03/2011 को आरम्भ और 13/03/2029 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 18 वर्ष है। आपकी जन्मकुण्डली में राहु तृतीय भाव में स्थित है। इस स्थान से राहु की दृष्टि नवम भाव पर है। इसके पूर्व आपकी 7 वर्ष की मंगल दशा चल रही थी। मंगल के कारण आपको लाभ, कुछ स्वास्थ्य समस्या और विरोधियों व शत्रुओं का विरोध मिला होगा। राहु की वर्तमान दशा में आपको शत्रुओं पर विजय, सम्पत्ति और सौभाग्य की प्राप्ति होगी।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपको शक्ति तथा स्फूर्ति मिलेगी। किन्तु, मौसम में परिवर्तन के कारण चर्मरोग, दाहक रोग, स्नायविक दुर्बलता और शारीरिक थकावट हो सकती है। इन मामूली रोगों को दोड़ कर आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा।

अर्थ और व्यवसाय :

इस दशा के दौरान आपकी आर्थिक स्थिति उत्यन्त सुदृढ़ होगी। आपको सम्पत्ति तथा लाभदायक कार्य की प्राप्ति होगी। सट्टे, निवेश में लाभ मिलेगा। नौकरी में भी सुन्दर लाभ मिलेगा। पिता से अथवा परिवार से लाभ मिल सकता है। उच्चाधिकारियों से लाभ की सम्भावना है। जीविका तथा व्यवसाय के लिए तकनीकी और वैज्ञानिक सेवा, राजनीति, कम्प्यूटर विज्ञान, इलेक्ट्रॉनिक, यातायात, कूटनीतिक कार्य आदि का चयन कर सकते हैं। चमड़े के सामान, पत्थर, रत्न, बिजली के उपकरण, दवा, रसायन आदि का व्यापार लाभदायक सिद्ध हो सकता है। नौकरीपेशा लोगों को लाभ, यश और ख्याति की प्राप्ति होगी तथा जीवन-वृत्ति में प्रगति होगी। व्यवसाइयों-व्यापारियों को कुछ उतार-चढ़ाव का सामना करना होगा किन्तु वे अपने रास्ते में आनेवाली सभी बाधाओं का नाश करेंगे। आपकी आय तथा लाभ में वृद्धि होगी और दशा की प्रगति के साथ-साथ व्यापार का विस्तार होगा।

वाहन, यात्रा, जमीन-जायदाद :

बुध की अन्तर्दशा में आपको जीवन का सुख मिलेगा। आपके निवास में परिवर्तन हो सकता है अथवा आपको एक मकान की प्राप्ति हो सकती है। आप गाड़ी की खरीद या बिक्री कर सकते हैं। जमीन-जायदाद के मामलों में नुकसान से बचने के लिए आपको सावधान रहना होगा। इस दशा के दौरान आपकी अनेक छोटी यात्राएं होंगी। शुक्र की अन्तर्दशा में दूर की यात्राओं की सम्भावना है।

शिक्षा :

इस दशा के दौरान आपकी शिक्षा लाभदायक होगी। आप तेज ओर दृढ़प्रतिज्ञ हैं और सभी परीक्षाओं में सफल होंगे। विज्ञान, दवा, रसायन शास्त्र, इन्जीनियरिंग, सरकारी सेवा तथा यातायात के क्षेत्र में आपकी रुचि होगी।

परिवार :

परिवार के सदस्यों के साथ आपका सम्बन्ध मधुर रहेगा। आपके बच्चों के लिए यह समय लाभदायक और समृद्धि दायक होगा। आपके जीवनसाथी की दूर की यात्रा और समृद्धि तथा सुन्दर भाग्य की प्राप्ति हो सकती है। आपकी माता की यात्रा, व्यय और धार्मिक कार्यों की ओर उनका झुकाव हो सकता है। आपके पिता को साझेदारों, वाणिज्य-व्यापार और यात्रा से लाभ होगा। आपके छोटे भाई-बहनों को सम्पत्ति तथा समृद्धि की प्राप्ति होगी और उनका निवेश सफल होगा। उनके साथ मधुर सम्बन्ध बनाए रखने के लिए आपको कुछ प्रयास करना होगा।

अन्तर्दशा :

राहु की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के कारण आपकी छोटी यात्रा होगी, सम्बन्धियों से सहायता मिलेगी और आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। गुरु की अन्तर्दशा में जीवन में सफलता मिलेगी। साझेदारों से लाभ होगा और विवाह तथा यात्रा होगी। शनि की अन्तर्दशा के फलस्वरूप परिवर्तन, सौभाग्य की प्राप्ति तथा यात्रा होगी। बुध के कारण यश, ख्याति, सम्पत्ति तथा आनन्द की प्राप्ति होगी। केतु की अन्तर्दशा में कुछ समस्याएं उत्पन्न हो सकती हैं। शुक्र की अन्तर्दशा के दौरान सन्तान से सुख, यात्रा तथा सौभाग्य की प्राप्ति होगी। सूर्य की अन्तर्दशा में छोटी यात्रा, शक्ति और सम्बन्धियों से सहायता मिलेगी। चन्द्र की अन्तर्दशा में लाभ तथा जीवन का सुख मिल सकता है। मंगल की अन्तर्दशा के फलस्वरूप कुछ मामूली स्वास्थ्य समस्या और लाभ प्राप्त हो सकता है।

अंर्तदशा :- राहु - शुक्र
(30/09/2022 - 30/09/2025)

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 14/03/2011 को प्रारंभ होकर 13/03/2029 को समाप्त होगी। इस महादशा में शुक्र अंतर्दशा की अवधि 3 वर्ष होगी जो आपके लिए 30/09/2022 को प्रारंभ होकर 30/09/2025 को समाप्त होगी।

शुक्र आपकी जन्मपत्री में छठे भाव में स्थित है। छठा भाव बीमारी, सुश्रूषा, मातहत या सेवक, कर्ज़, शत्रु, कंजूसी और अतिकष्ट का द्योतक है। शुक्र शुभ ग्रह है। छठे भाव में स्थित होकर शुक्र आपकी कुंडली के द्वादश भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में विपरीत लिंग के व्यक्ति आपसे रुष्ट रह सकते हैं। वे आपका चरित्र बर्बाद कर सकते हैं। शत्रु इस अवधि में समाप्त हो जाएंगे। विषय-वासना में अधिक रुचि के कारण स्वास्थ्य की हानि हो सकती है।

अरिष्ट से बचाव और शुभत्व में वृद्धि के लिए शुक्र वैदिक मंत्र के 16000 जाप करें।

अंर्तदशा :- राहु - सूर्य
(30/09/2025 - 25/08/2026)

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 14/03/2011 को प्रारंभ होकर 13/03/2029 को समाप्त होगी। इस महादशा में सूर्य की अंतर्दशा 10 मास 24 दिन की होगी जो आपके लिए 30/09/2025 को प्रारंभ होकर 25/08/2026 को समाप्त होगी।

सूर्य आपकी जन्मपत्री में चतुर्थ भाव में स्थित है। चतुर्थ भाव मष्तिष्क का रुझान, बुद्धि, साहस, छोटे भाई-बहन, लघु यात्राएं, विचार संचार, हाथ, कंधे आदि का परिचायक है। सूर्य शक्तिशाली ग्रह है। चतुर्थ भाव में स्थित होकर सूर्य आपकी कुंडली के दशम भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप चिंतित और अप्रसन्न रह सकते हैं; व्यर्थ इधर-उधर भटक सकते हैं। दर्शनशास्त्र और तंत्र-मंत्र में रुचि हो सकती है। राजनीति में सफलता मिलना कठिन होगा। जीवन से संबंधित पहेलियों को सुलझाने में और दार्शनिक चिंतन में समय बिताएंगे। विरासत में जायदाद मिल सकती है।

अरिष्ट से बचाव और शुभत्व में वृद्धि के लिए :

- दूध और शहद का सेवन करें; अग्नि को दूध अर्पित करें।
- आटा, गुड़ और तांबे के सिक्के दान करें।
- बहते पानी (नदी आदि) में तांबे के सिक्के डालें।

अंर्तदशा :- राहु - चन्द्र
(25/08/2026 - 24/02/2028)

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 14/03/2011 को प्रारंभ होकर 13/03/2029 को समाप्त होगी। इस महादशा में चंद्रमा की अंतर्दशा 1 वर्ष 6 मास की होगी जो आपके लिए 25/08/2026 को प्रारंभ होकर 24/02/2028 को समाप्त होगी।

चंद्रमा आपकी जन्मपत्री में लग्न में स्थित है। लग्न शारीरिक बनावट, आकृति, स्वास्थ्य, जन्मजात स्वभाव और आदतें, सम्मान, गरिमा, सामान्य शुभत्व, चेहरे का ऊपरी भाग, आयु और जीवन की रुपरेखा आदि का परिचायक है।

चंद्रमा मन और माता का कारक है। लग्न में स्थित होकर चंद्रमा आपकी कुंडली के सप्तम भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

आप सुंदर, संवेदनशील और मूड़ी हैं। इस अवधि में घरेलू सुख और माता से संबंध उत्तम होंगे।

आप बेचैन, संवेदनशील और कल्पनाशील होंगे। कार्यों में सफलता मिलेगी मगर कुछ बाधाएं आएंगी। आय अच्छी होगी, उच्चपद प्राप्त होगा। क्रोध में आपा खोने से बचना अनिवार्य है, अन्यथा बहुत हानि होगी।

शुभत्व में वृद्धि के लिए चंद्रमा के वैदिक मंत्र के 11000 जाप करें।

चंद्रमा को चंद्र उदय के समय मंत्रोच्चार करते हुए कच्चा दूध अर्पित करें।

अंर्तदशा :- राहु - मंगल
(24/02/2028 - 13/03/2029)

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है जो आपके लिए 14/03/2011 को प्रारंभ होकर 13/03/2029 को समाप्त होगी। इस महादशा में मंगल की अंतर्दशा 1 वर्ष 18 दिन की होगी जो आपके लिए 24/02/2028 को प्रारंभ होकर 13/03/2029 को समाप्त होगी।

मंगल आपकी जन्मपत्री में द्वितीय भाव में स्थित है। द्वितीय भाव भाग्य, लाभ-हानि, सांसारिक उपलब्धियां, रत्न, वाणी, दायीं आंख, महत्वाकांक्षा, जीभ, दांत और परिवार के सदस्यों का प्रतिनिधि है।

मंगल ऊर्जा का कारक है। द्वितीय भाव में स्थित होकर मंगल आपकी कुंडली के 5, 8, 9 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपके कार्यों में बाधाएं आएंगी, मगर आय अच्छी होगी। धन संचित होगा। आप कंजूस हो सकते हैं; परिवार में झगड़े हो सकते हैं। कटुवाणी के कारण शत्रुता बढ़ेगी। ऊर्जा का उपयोग सकारात्मक कार्यों में करना श्रेयस्कर रहेगा, इससे साख की रक्षा हो सकती है।

महादशा :- गुरु
(13/03/2029 - 13/03/2045)

आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा 13/03/2029 को आरम्भ तथा 13/03/2045 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 16 वर्ष है। गुरु आपकी जन्मकुण्डली में पांचवें भाव में स्थित है। पाँचवां भाव संतान, आनन्द, आमोद-प्रमोद, रोमांस, वर्ग-पहेली जैसी प्रतियोगी स्पर्धाओं, लॉटरी, प्रेम-संबंध, अच्छी या बुरी मानसिकता, धार्मिक बौद्धिकता, उच्च शिक्षा तथा सत्ता, विशाल संपत्ति आदि का भाव है। गुरु स्वभावतः एक शुभ ग्रह है। पांचवे भाव में स्थित यह आपकी कुण्डली के 9वें, 11वें तथा पहले भाव को प्रभावित करता है। 16 साल की यह अवधि आपके लिए शान्तिपूर्ण, समृद्धिदायक तथा कल्याणकारी होगी।

स्वास्थ्य :

महादशा स्वामी गुरु पाँचवें भाव में स्थित है। यह एक त्रिकोण है। गुरु का प्रभाव प्रथम भाव (9वें तथा 11वें के अतिरिक्त) पर है जो व्यक्तित्व तथा व्यक्तिगत मामलों के भाव के साथ-साथ एक त्रिकोण और केन्द्र भी है। फलतः आपकी शत्रुओं से रक्षा होगी। किसी बड़ी दुर्घटना की सम्भावना नहीं है। आप अपने कर्त्तव्य का पालन करते हुए एक सामान्य जीवन व्यतीत करेंगे।

अर्थ और सम्पत्ति :

गुरु पाँचवें भाव में स्थित है जो प्रतिस्पर्धा तथा विशाल सम्पत्ति का भाव है। अतः आपको अपनी संपत्ति तथा वित्त को बढ़ाने के अनेक अवसर प्राप्त होंगे।

व्यवसाय :

इस दशा काल में आप अत्यन्त ही बुद्धिमान रहेंगे और तर्कशास्त्र तथा कानून में अभिरुचि रहेगी। नौकरी में आपकी पदोन्नति होगी तथा धनोपार्जन का अवसर मिलेगा।

व्यवसाय के प्रति आपके दिमाग में नई-नई योजनाएँ आएंगी जिनके क्रियान्वित होने पर आपको स्रोत तथा वित्त बढ़ाने का अवसर मिलेगा और समाज का सहयोग प्राप्त होगा। गुरु के 11वें भाव पर, (9वें तथा पहले भाव के अतिरिक्त) जो आय का भाव है, प्रभाव के फलस्वरूप आपकी आय में वृद्धि होगी।

पारिवारिक जीवन :

गुरु का संबंध दोनों त्रिकोणों के साथ, पाँचवें में स्थित होने तथा 9वें एवं पहले (जो एक त्रिकोण और केंद्र भी है) पर दृष्टि होने से आपका पारिवारिक जीवन काफी उत्साहपूर्ण तथा खुशहाल होगा। आपके जीवनसाथी सहयोगी तथा सहायक होंगे। आपके बच्चे अत्यन्त आज्ञाकारी होंगे। आपका पारिवारिक जीवन अच्छा होगा।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

दोनों त्रिकोणों से सम्बद्ध तथा पंचम भाव में स्थित गुरु की दृष्टि 9वें और पहले

भाव (त्रिकोण तथा केन्द्र) पर होने के कारण आपका पारिवारिक जीवन सुखमय रहेगा। आपके जीवनसाथी आपके सहयोगी तथा बच्चे आज्ञाकारी होंगे।

अंर्तदशा :- गुरु - गुरु
(13/03/2029 - 01/05/2031)

आपके लिए बृहस्पति की महादशा 13/03/2029 को प्रारंभ हो रही है। इस महादशा में पहली अंतर्दशा बृहस्पति की होगी जिसकी अवधि 2 वर्ष 1 मास 18 दिन रहेगी। आपके लिए यह 13/03/2029 को प्रांरभ होकर 01/05/2031 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बृहस्पति बुद्धि, उच्चज्ञान, जीवन और धन का कारक है।

इस अवधि में आपको संतान से खुशी मिलेगी। निवेश और सट्टेबाजी से लाभ हो सकता है। घर में मांगलिक उत्सव हो सकते हैं। सलाहकार के पद पर कार्य कर सकते हैं। समृद्धि का समय है, पारिवारिक सुख उत्तम रहेगा। भौतिक प्रगति के बहुत से अवसर आएंगे। उच्चशिक्षा उत्तम होगी या शिक्षा पूर्ण हो सकती है।

आपके जीवनसाथी को विभिन्न माध्यमों से धनार्जन होगा, प्रभावशाली मित्र होंगे, सफलता और समृद्धि का योग है। आपके पिता धनी ओर सौभाग्यशाली रहेंगे। माता धनी होंगी ; कार्यों में सफल रहेंगी। आपके भाई-बहनों के लिए लाभ, उत्कृष्ट समय और साझेदारी से लाभ का संकेत है।

आपकी संतान को कार्यों में सफलता मिलेगी। अगर वे कार्यरत हैं तो धनी बनेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो तबादला हो सकता है; अप्रत्याशित घटना घट सकती है। परामर्शदाताओं को साझेदारी से लाभ होगा; परिवर्तन हो सकता है। व्यापारी खूब धन कमाएंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। पाचनतंत्र की देखभाल करना श्रेयस्कर रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए विष्णुजी की उपासना करें।